सम्मान लौटाना क्या सही है?

प्राचीनकाल से कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है, साहित्य समस्त ब्रहमांड के कालचक्र का साक्षी होता है। साहित्य अर्थात 'सबका हित'। साहित्यकार समाज की सारी अच्छाइयों को रचने तथा बुराइयों की आलोचना करते हुए एक लोकतांत्रिक समाज की रचना करता है। यही कारण है कि साहित्य और समाज की रचना करने वाले साहित्यकारों को सभी जगह सम्मान की दृष्टि से देखा जाता हैं। भारतीय संस्कृति में साहित्यकारों को 'ऋषि' 'सरस्वतीपुत्र' जैसी उपमाओं से अलंकृत करते हुए लोग उनकी शुचिता को प्रणाम करते हैं और उनकी बातों, विचारों को आत्मसात करते हैं।

पिछले कुछ समय से साहित्यकारों ने देश में बढ़ रही असहिष्णुता और असंवेदनशीलता के खिलाफ अपना पुरस्कार लौटाकर अपना क्रोध जाहिर किया। कन्नड़ साहित्यकार और चिंतक एम एम कुलबर्गी की 30 अगस्त को कर्नाटक में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। कुलबर्गी धार्मिक कर्मकांड और मूर्ति पूजा के विरोधी थे। उन्होंने पिछले साल मूर्ति पूजा के विरोध में बयान दिया था जिसके बाद कट्टरपंथियों ने उन्हें जान से मारने की धमकी दी थी। इससे पहले फरवरी में वामपंथी विचारक गोविंद पानसरे की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। पानसरे ने महाराष्ट्र में टोल नाके के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया था। 28 सितंबर को उत्तर प्रदेश के दादरी में 52 साल के अखलाक की गोमांस पकाकर खाने की अफवाह के बाद हत्या कर दी गई थी। हत्या का आरोप इलाके के ही हिंदू युवकों पर लगा था। देश में इस प्रकार की हो रही घटनाओं के खिलाफ साहित्यकारों ने अपना गुस्सा सरकार द्वारा दिये गये पुरस्कार को लौटाकर जाहिर किया। साहित्यकारों की तर्ज पर ही फिल्मकारों ने अपने पुरस्कार वापस किए। लेकिन क्या सरकार द्वारा दिये गए सम्मान को वापस लौटाना उचित है?

जवाहरलाल नेहरू ने दशकों पूर्व एक उदाहरण प्रस्तुत किया था, साहित्य की महत्ता को प्रणाम करने का। आज के शासकों को और आने वाले शासकों को भी कलम की सत्ता का सम्मान करना सीखना होगा। कलम की सक्रियता का अर्थ समझा जाना जरूरी है, स्वयं रचनाकार के लिए भी, समाज के लिए भी और सत्ता के लिए भी। असंवेदनशीलता और असहिष्णुता के खिलाफ जो मुहिम रचनाकारों ने चलायी है, वह हमारे समय और समाज की महती आवश्यकता है। इस मुहिम के निहितार्थों को सत्ता को समझना ही होगा।

पुरस्कार पूरे विश्व की परंपरा में शामिल है। पहले यह राजाओं तथा सत्ता द्वारा अच्छी प्रतिभा के प्रोत्साहन के लिए दिये जाते थे। वर्तमान में भी प्रतिभाओं के प्रोत्साहन के लिए सरकार यानी सत्ता,

संस्थाओं द्वारा पुरस्कार दिये जाते हैं। लेकिन चिंता का विषय यह है कि क्या इन पुरस्कारों का लौटाना सही है?

पिछले दिनों साहित्य अकादमी पुरस्कार लौटाने का सिलसिला सुर्खियों में रहा। इसी की देखादेखी एफटीआईआई में गजेंद्र चौहान की नियुक्ति के विरोध में 10 फिल्मकारों ने अपने राष्ट्रीय सम्मान लौटाने की घोषणा कर दी है। इस पर वाद-विवाद हो रहा है। पुरस्कार लौटाने वालों का तर्क है कि सत्ता की ओर से असहिष्णुता के वातावरण को बढ़ावा दिया जा रहा है या फिर इस वातावरण के विरुद्ध उपाय नहीं किये जा रहे हैं। इस पूरे घटनाक्रम के बीच प्रतिष्ठित वैज्ञानिक श्री पी एम भार्गव ने अपना पद्म विभूषण सम्मान लौटाने की घोषणा कर पूरे मामले को और गर्म कर दिया है। उनका तर्क भी यही है कि असहिष्णुता के माहौल के लिए सत्ता जिम्मेदार है जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए।

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार एक समय अपने कला मानकों के आधार पर लिये जाने वाले निर्णय के लिए प्रतिष्ठित रहे। लेकिन, वही दुष्चक्र इनके साथ भी घटा। पिछले कुछ समय की यादें आपके जेहन में होंगी जब राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों पर उंगलियां उठीं।

इस पूरे मामले में सोचने और सवाल करने का मुद्दा यह है कि जब लेखक या कलाकार सत्ता के विरोध में स्वभाव से होता ही है, तब वह पहले पुरस्कार ग्रहण ही क्यों करता है? दूसरा यह कि सत्ता के अलावा जिन संस्थाओं से वह पुरस्कार ग्रहण करता है, क्या उसे पहले से मालूम नहीं होता कि वे संस्थाएं किस विचारधारा या शक्तियों से संबद्ध हैं? तीसरा यह कि पुरस्कार लौटाकर सरकार का विरोध क्या तब तक दिखावा नहीं है, जब तक आप अन्य सभी सरकारी सुविधाओं का त्याग न करें। और यह भी कि पुरस्कार लौटाने के पहले क्या यह विचार किया जाता है कि उस पुरस्कार की साख दांव पर लगेगी? उस पुरस्कार की प्रतिष्ठा एवं भविष्य में उसका औचित्य खतरे में पड़ जाएगा।

० ० ०